

परमार वंश भारत के मध्यकालीन इतिहास का एक महत्वपूर्ण राजवंश था, जिसका शासन मुख्य रूप से मालवा क्षेत्र (वर्तमान मध्य प्रदेश) पर केंद्रित था। यह वंश 9वीं से 14वीं शताब्दी के बीच प्रभावी रहा। परमार वंश ने कला, साहित्य और स्थापत्य के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया।

परमार वंश का उदय

परमार वंश की स्थापना वासुदेव परमार ने की थी, जो 9वीं शताब्दी के आसपास हुए। परमारों का मूल स्थान दक्षिण भारत माना जाता है, लेकिन धीरे-धीरे यह वंश उत्तर भारत की ओर बढ़ा और मालवा क्षेत्र में अपनी शक्ति स्थापित की। परमार वंश के राजा चक्रदत्त को इस वंश के प्रारंभिक शासकों में प्रमुख माना जाता है।

भोज परमार और परमार वंश का स्वर्ण काल

राजा भोज परमार (1010–1055 ई.) परमार वंश के सबसे प्रसिद्ध शासक थे। उन्हें "धर्मराज" और "सरस्वतीकंठाभरण" जैसे सम्मानित उपाधियों से जाना जाता था। उनके शासनकाल को परमार वंश का स्वर्ण युग कहा जाता है। भोज ने न केवल अपने राज्य का विस्तार किया, बल्कि सांस्कृतिक, साहित्यिक और स्थापत्य के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1. राजनीतिक दृष्टि से: भोज ने पड़ोसी राज्यों जैसे चालुक्य, कच्छपघाट और प्रतिहारों के साथ संघर्ष किया और अपने राज्य की सीमाओं को विस्तार दिया।

2. सांस्कृतिक योगदान: भोज ने संस्कृत साहित्य में कई ग्रंथों की रचना की, जिनमें "सरस्वती कंठाभरण" और "समरांगण सूत्रधार" प्रमुख हैं।

3. शिक्षा और कला: भोज ने धार नगरी (मालवा) को शिक्षा और कला का केंद्र बनाया। धार के भोजशाला मंदिर को उन्होंने ही स्थापित किया।

परमार वंश का पतन

राजा भोज के बाद परमार वंश की शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होने लगी। उनके उत्तराधिकारी प्रभावशाली शासक नहीं रहे। 12वीं शताब्दी में चालुक्य और तुर्क आक्रमणों ने परमार राज्य को कमजोर कर दिया। 1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा पर आक्रमण किया और परमार वंश का अंत कर दिया।

परमार वंश की विशेषताएँ

1. सांस्कृतिक विकास: परमार शासकों ने मंदिर निर्माण और कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उज्जैन, धार, और मांडू उनके स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

2. साहित्यिक योगदान: परमार काल में संस्कृत साहित्य का अद्वितीय विकास हुआ। राजा भोज के संरक्षण में कई विद्वानों ने रचनाएँ कीं।

3. धार्मिक सहिष्णुता: परमार शासक हिंदू धर्म के अनुयायी थे, लेकिन जैन धर्म को भी संरक्षण दिया।

निष्कर्ष

परमार वंश का इतिहास भारतीय मध्यकालीन राजनीति, संस्कृति और कला का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यद्यपि इस वंश का राजनीतिक प्रभाव सीमित समय तक ही रहा, लेकिन इसका सांस्कृतिक प्रभाव दीर्घकालिक और व्यापक रहा। राजा भोज जैसे शासकों के योगदान ने इस वंश को भारतीय इतिहास में विशेष स्थान दिलाया।